निर्गुण कवि एवं संत : कबीर और रैदास

सुमन विश्वकर्मा

भारत के इतिहास में उत्तर भारत के सन्तों की परम्परा आज तक चली आ रही है। इनकी रचनाओं में स्वानुभूति पर आधारित ज्ञान और गहरी भावानुभूति दिखाई देती है। भक्ति काव्य के समन्वय की दृष्टि से सोलहवीं शताब्दी अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। भक्ति का सीधा सम्बन्ध भक्त और भगवान से होता है। सूरसागर के रचियता सूरदास, रामचरितमानस के गोस्वामी तुलसीदास, कृष्ण की अनन्य उपासिका मीराबाई, हिन्दू–मुस्लिम में समन्वय स्थापित करने वाले कबीरदास, दादूदयाल और रैदास आदि कई निर्गुण संत माने गए है। जिनमें कबीर और रैदास को प्रगुण निर्गुण कवि और संत माना गया है।